

### पाठ<del>-सू</del>ची पूर्वार्ध

#### गद्य भाग

1444			2.5
१—विदाको महिमा			1
२—गुरडी की भाषा का पालन	•••		
	•••	•••	8
४ -परिधम	•••		Ę
<b>५—दया</b>	***		5
			६०
उ — सञ्चनवा का वर्ताव	•••		11
८—सत्यभाषद	•••	•••	13
र-परोपकार	•••	•••	14
०महादेव गोविन्द रानाडे	•••		10
			15
= (5)			37
:—निजेभ			₹8
n "mh ("4 mf+) (			• *



7 (₹) पद्माग विरय - इस्तेर की करती ÷- ., £5 इ. स्ट्रांच हे राहे ··· ξυ ž १ - इन देन स्काहि ··· इ४ ६—विद्वरहाँहि ... ••• ··· ₹€ ... ६ विनद हे होते ... ... 13 مستبعث فيرائع بأعيا ٠.. ٠٠. وج ६—हिन्दविने,द सदस्र ... ... 3: ٠.. £\_\_ ... 3 \*\* \*\* ٠., ... 35 ••• ... 35 उत्तरार्थ १-दन्द्राई का माहम गद्यमाग - इस् सेर साधु े पहन देवां के बहुरत साके होते -संब हुई के दब्दात -F7 F- 77 F4. Ξ.



# बालिवनोद

द्वादा भाग पूर्वार्ध गद्यमाग

## १-विद्या की महिमा

एक दिन एक जड़का करनी माझ के पान देंगा हुक हुत संख रहा था। संख् में कैंडे हुए एवं से माता में कहा— ्या किस केल में बैठे हैं। हा महिल के कहा के बतात होते का उपाय से.च रहा है।" माता ने कहा - 'हुनके दर्ग होते को बाद कर्यों से बाते हैं। बहुके में कही करें देखता हूँ बहा बनवाद नतुम्य को प्रतिष्ट होता है .. त्र के के के के के के के के कि The state of the s The state of the s रेट इंचरक र कार्र रहे जरूर रेट कर प



#### २--- गुम्जी की प्राज्ञा का पालन

एक गुरजी अपने घर पर बहुत से विद्यार्थियों को पहाया करते थे। उनसे आर्गात नाम का एक निष्ठार्थी गुरुजी क्षे श्री यहां रहता और वहीं पढ़ा करना था। गुरुजी अपने दिखार्थियों से बहुं परिश्रम के कार्य कराया करने थे। ऐसा वे इसलिए करते थे कि जिससे विद्यार्थियों के। बचपन से ही परिश्रम करने का अस्पास ही जाय।

एक दिन गुरुलां ने भारती को एक सेन को मेंट्र बांबने की भारता दो। गुरुलां की भारता पाने ही भारता भन्न इट कर सेन की चल दिया। वहां पहुँच कर बहुधान के सेट की मेट्र बांधने लगा। इसने बट्टे परिश्रम से चारों भोर की मेट्रें साथ दीं। परस्तु एक जगह बाट्टों सो मेट्रे इससे न हैंथ सकी। उन बेचारे ने क्ट बार मेट्र धनाई, परस्तु पानी का बेग वहां इटना अधिक था कि बहु जब बनाता तभी पानों मेट्रे की काट देता। अस्त में जब इसने देखा कि यह सेट्रे सेर बांधे न वैय सकेगी तब बहु आप ही बहां लेट गया जहां से पानी बाहर निकलना था। इसके लट जाने से गानी निकलना बन्द हा गया बहु कह बज्द इसा अकार पानी राफ पड़ा रहा

जब सायकाल हो आपता तथा गहाता आधारीत का नाद स्य अस्त्रीय विद्यालया साहता का अस्त्रा अस्ता ने विद्यान प्रयोग ने की विद्यालया है हैं। इस नहीं के अस्य कहाँ हैं। "



्वा है। क्योंग के दिना किसी की कुछ भी नहीं निह कता।

महुच्यों की बात जाने शिलिए. होटे होटे कोटों तक को म काम करते देखते हैं। शहद की मक्सी की देखिए, वह जना होटा जीव हैं। इन मिक्सपी में से कुछ पुष्पी का रस म कर लाती हैं, कुछ रहने के लिए छना लगाती है भीर कुछ हद हैयार करती हैं। सारशि यह कि शहद की मिक्सपी ह कुछ न कुछ उद्योग सबस्य करती ही रहती हैं।

बहे दुःस की बात है कि छोटे छोटे की हे मको है तो रात देन उद्योग में लगे रहे धीर मनुष्य चुपपाप शाम पर शाम रे बैठे रहें। सुरु बैठने के लिए मनुष्य नहीं बनाया गया। एह काम धीर उद्योग करने के ही लिए बनाया गया है। प्रालम में पड़े रहने धीर उद्योग न करने से मनुष्य का कोई राम नहीं बन सकता।

पर में भनेक प्रकार के त्याने पीने के पदार्थ रक्ते हों, सामने भीषधें का देर लग रहा हो, परन्तु उनके देखने से ही न तो किसी की भूत दूर होगों भीर न रोग शान्त होगा। भूत्व भीर रोग के दूर करने के लिए उनकी उचित रीति से खाना पीना चाहिए। त्याना पीना भी एक प्रकार का काम है। स्मकं निए भी बगान की भावत्यकता है। अनएव कार्य-प्रमाद क निए सबके उगांग करना चाहा।

अ नेत्य कीम नहीं करत याता तिकरन रह रहत



दे विनक्ष निरास है। सर्व धीर ध्ययने जी से कहने लग कि सेरी सुद्धि यही सोटी है, यह स्थाकरण की विद्या सुन्न कथी स ध्यावेगी, इसिन्स इसने परिक्षम करना स्थाये हैं। इनके साम्मी ती पह कर पूरे वैयाकरण विद्वान बन गये, पर से कोरे के कोरे ही रहें।

एक दिन गुरुणों से बेप्पदेश की ज़ुदूर पीटा । उसी दिन स पर्जा जिस्सा सब कीड़ काड़ कर वे घर से भाग तथे बैपर कुछ दिन दथर पथर सार्र सार्र जिस्ते रहे ।

बोपरेव यूगते जिनते एक दिन कियों सरोपर का पाट पर जा तिक में । यह पाट पायर का बना हुआ था । वे बैटे ही यो कि दुग्ने में एक को पटा सेकर पाट पर कार्ट कीन पड़ा याए पर नार कर नगात करने सारों । नगान कर युक्ते पर दुश यह को पार्टी से मह कर करने पह को पार्टी गरें।

लिस स्थान पर बहु यह उबसा मा बहा सहुत परा हुन्या यह बारम् यह बर देव प्रांत हिन हरी स्थान पर महा रक्ष्या गाण बर्ग कीर जिल्ल यह बर साह से प्रायन सहुता पर गला मा कीर हरी हम का बीएट्ट कारन जन में दियार बर्ग मन मा कीर हरी हम का बीएट्ट कारन जन में दियार बर्ग मन मा कीर हमें हम कह बीरक्षण बर्ग से प्रदेश के कार मा प्रायम कारण है तह बद्द परिक्रण बर्ग से मार माहा होट जिल्ला कहा नाइल

पर विकास के बाजरबादर अपने क्षेत्र होते हे सुक्रम कार्या



Æ

यह कर संसार में भीर कोई घच्छा काम नहीं। मनुष्य को उचित है कि जहां तक हो सके दूसरों का कष्ट दूर कश्ने का प्रयत्न करे।

सय दिन एक से नहीं रहते। भाज जो नव प्रकार से सुख चैन में हैं, न जाने कल इस पर क्या विपत्ति भा पड़े। भ्रापत्ति में यदि कोई किसी को वचनी से भी महायता करता है तो इतने ही से इसे बहुत कुछ सहारा मिल जाता है।

गाय, बैल घादि पशु धपना सुख दुःच किसी से कह नहीं मकते। इस कारण उन्हें कभी कष्ट न पहुँचाना चाहिए। किसी पंगु, खूने, अंधे धीर रोगो को देख कर उसकी हैंसी न उड़ानी चाहिए। तुम्हारी सहायता से उनका यहुत कुछ भन्ना हो सकता है।

एक दिन काशी में एक लेंगड़ा साधु मार्ग में पड़ा था। माप का महीना था। यड़ा जाड़ा पड़ रहा था। मारे जाड़े के वह ठिठुर रहा था। उसी समय दयाशहूर नामक एक लड़का उसी मार्ग से जा रहा था। दयाशहूर को उस लेंगड़े साधु पर दया था गई। वह उसका कष्ट धीर न देख सका। दयाशहूर ने दया करके अपना कपड़ा उतार कर उसे थोड़ने के जिए। दे दिया।

जब देयाशङ्कर आपने घर गया नव उसने कपहा है हैने कासब ज्वान्त अपन पिताको सना देया। उसका पिता उसके बत कीम संबद्धानसन्न हुस्यो , इसन उसका प्रदार



भागने लगी। मुँगे ने कहा—'क्यों, क्यों, कहां चली १ अब के कोई भय की बाद नहीं हैं।'' लीमड़ी ने कहा—''यह दो सब हैं, परन्तु कहीं इन कुचों ने भी तुन्दारी तरह टिंदीरा न सुना हो।''

#### ७-सजनता का वर्ताव

धन्छे पुरुष सपने साम धन्छो वरह वर्षाव किया करते हैं। वे सदा ऐसे हो बचन बोला करते हैं जिससे सपका चित्त प्रसन्न हो। भन्ने पुरुष जब किसो से मिन्नते हैं तब उसका कुशल-समाचार पृद्धते हैं और सबका धादर-सत्कार करते हैं। इसी को सज्जनता का बर्जन कहते हैं।

जिन मनुष्य की वादी में नम्नत कीर मीतापन नहीं इसके साथ निलने की किसी का मन नहीं चाहता। सब कोई इससे कवते ही रहते हैं। ऐसा मनुष्य शीव ही संसार में दुराई का घर दन जाता है।

नमस्कार भीर प्रयाम करके कुगल पूछने भीर भपनी मीठी वार्यो से दूसरे की असल करने में गाँठ की एक कौड़ी भी नहीं लगती। परन्तु ऐसा करने से लाभ बहुत होता है। इसी लिए सलुक्य दूसरों के साथ सदा सञ्चनता का दर्तांड किया करते हैं।

जा काई भएने पर भावे हमक साथ सञ्जनता का वर्ताव

करना चाहिए। त्री मिलन यात्र्य हो उनसे म मिलना धीर इसके साथ दुर्जनना का वर्ताव करना उचित नहीं। ऐसा करनेवाली की मिननी सहानां से नहीं हो सकती। जिसमें सजनना नहीं वह सहान कहायि नहीं हा सकता।

महातना का वर्ताव सामा का हा हमा मगुर्धों की संगति करनी शाहिए। अब पुरर्धा सामा कर उनकी मही-संगति करनी शाहिए। अब पुरर्धा सामा कर उनकी मही-संग्रा के क्लोब की जान स दुस्ता पाहिए।

सञ्जत पुरुषों का पहला पहणान यह है कि वे दूसरों को प्रतिद्वा का स्थान रुक्शा करते हैं। वे ध्यान संपन्नी पर हुया किया करते हैं भीर किसी संगक भ्राप भी दनका हा जप्यता व उपका सुमा कर दते हैं।

आ लियाओं पालनता का बनांव करने हैं कनकी सभी भागत है। ने सक्त सुभा रहने हैं भीर करते की प्रतिवा क्षेत्रों है।

#### =-सन्यभाषण

सन्त से बहु कर संसार में केंद्रे पहली नहीं। सन्द वं सन्दर्भ संस्कृत सारी से बारी सामहत्त्वी की भी पार कर कना है। सन्द बीरनेवार्त सनूत्व की संसाद से बही होत्सु

हाता है। मनुष्य की तीरत है कि चारी विश्वन ही आही सक्दर की में बार जान परन्तु रूप की हाल में में कार्य है। सहकी, हुन मदा सरा पाला करों। मूल से भी कभी मूल दात तुंत से न निकाला करों। मूल वीलीगे वे। लोगों की हिंद में गिर लाक्षेत कीर किर तुम्हारा विश्वास जाता रहेगा। यदि किर सत्य पात भी कही तो कोई तुम्हारा विश्वास न करेगा। देखी, में दुम्हें एक सत्य मोलनेश लं लहके का कृतान्व सुनाता हूँ। तुम बसे ध्यान देकर जुनो।

एक पार पहुंच में भुमलमान पग्दाद गहर की ला रहें थे। पन्ते पन्ते वे एक बहुन में पहुँचे। सार्यकान हो गया था धीर पन्ती थी पही हूर। जाड़ा ऐसे कहाकी का पढ़ रहा था कि नदके हाथ पवि ऐटे जाते थे। वे लीग इस बहुन में जादी रहे थे कि इन्हें में बहुन से डाकु इन पर हुई पड़े। इनका मारा मान समयाद डाकुओं ने सीन निया।

इन्हीं पात्रियों में पक दीता जा लहका भी था। तह हाकुमों ने उसके बास शुद्ध न पाया तर वे उसके कपड़े टेडील्से तमें। परन्तु किर भी कुछ उसके हाथ न लगा। हर एक हाकू स नहके से दुद्धा-"क्या देरे पास कुछ नहीं हैं।" नदका था सर्वेश में उसके भट कह दिया-"दि हो।"



भोहूँग।' उसके साथ सब साथी डाकुओं ने भी प्रतिज्ञा कर ली कि अब इस किसी की कष्ट न देंगे। उन्होंने अपने सरदार से कहा—''जैसे घाज तक भाग तुराई में हमारे सरदार रहे वैसे ही सब मलाई में भी हमारे सरदार रहिए।''

उन हाकुओं ने सारा माल यात्रियों की लीटा दिया और वे उसी समय से सुमार्ग पर चलने लगे।

इस लड़के का नाम अय्दुलकादिर था । वह लड़का ईरान का एक बहुट यड़ा नामी साधु हो गया है।

#### ६-परोपकार

किसी राजा की सेना का एक सिराही बड़ा बज़ी कीर यहर या। राजा उसकी बड़ा प्रविद्धा करवा या। राजा की इस पर इवना विश्वास या कि उसने सारा कान उसी पर सोड़ रक्सा या। राजा जो कान करवा मय उसी की सम्मति से।

कुछ दिन एक तो वह निपादों राज्य के प्रत्येक कान में तन मन से उद्योग करता रहा। परन्तु कन्त में उनके मन म यह आया कि राजा की राजारा से उनार कर आप हो राजा दन वैठे उसा इंग्ला का पूरा करन के लिए। वह, धीरे धार एक रूप से पहुंचनत्र रचन कर

रम प्रदेशस्त्र का मारा भद्र राजा काम सुम हा रचा। राजा



इस कारम मेंने पाहा कि कोई ऐसा यन्यन होना पाहिए किसमें उनका सारा शरीर येंथ जाय और वह यन्यन किसी के काट न कट सके। यहुत हुछ सीच विचार के अनन्तर, उपकार या भलाई से अधिक और कोई बन्यन मेरी समक में नहीं आया। कारम यह कि उपकार का यन्यन मन पर होता है और मन सारे शरीर का राजा है। जय मन यन्यन में हाल दिया गया तद उसके हाय, पाँव आदि सारे अनुचर भी यन्यन में ही जाते हैं। उपकार के यन्यन से पूँच कर उपकार करने वाले की कभी कोई शांन नहीं पहुँचा सकता।"

#### १०-महादेव गोविन्द रानाडे

विद्यार्थियों, में आनवा हूँ, तुनमें से कोई ही ऐसा होना जिसमें दंबई नगर का नाम म सुना हो। समुद्र के वह पर यह एक बहुव हो विद्यास नगर है। वंबई का काम, जो तुम स्तावे हो, पहले पहल इसी नगर से लाया गया था। विलायव को बहुव सो बस्तुर्ये इसी नगर से यहाँ भावों हैं। वंबई के समीप हो एक पूना नामक नगर हैं। यहाँ के एक महापुरुष का हसान्व सुना। पहले यह चिंव होगा कि उस महापुरुष का नम्म बदला दिया जाय।

हनका माम महादेव रोविन्द रानाहे था। बचपन में वे वह दुवेन थे। सदा गुँगों को तरह चुपचाप बैठे रहा करते



इस कपरस्य देने काण्य कि केर्णु वस्ता सरका श्राण काण्य है। समें समक्षा सारव स्थाप केर पर बीग कर्णु बन्धा किया के स्वाप साम साम साम के स्वाप कर्णु कर्णु के स्वाप कर्णु कर्णु के स्वाप कर्णु कर्ण

#### १०-महादेव गांदिन्द गनाटे

रिवारिया, में शानता है, गुरमें से कोई हो ऐसा ऐसा जिसमें दर्भ नगर का नाम मुख्या हो। सहर की या यह यह एक वहुत ही दियान नगर है। पदर्भ का साम, जेर हम बारों ही, पहले पहल इसी नगर से साम गरूर था। दिला के जी करता मी बर्जुी इसी साम से पड़ी कारों हैं। पैपर्ट के समीद ही एक पूर्म साम मार है। पढ़ी के एक महापुरूष का सामन मुना। पाल पह चित्र होगा। कि इस महापुरूष का नामन मुना। पाल पह चित्र होगा। कि इस महापुरूष का नामन मुना। पाल पह चित्र होगा। कि इस महापुरूष का नामन पहना हुगा। नाम

्रातंत्र ज्ञान नगाइक शाहिन्द्र कर्मात था। **द**्यास स १ १८८ १३५५ १८ - २५५ हिगा के अहा पुरुष राध परह करते



मादा देख कर झाँर यहाँ समक्ष कर कि कोई साधारण मतुष्य होगा, उनसे कहने लगी—'भैया, विनक मेरे बोक को हाय लगा दो"। यह सुनवे ही उन्होंने बोक का कर बुढ़िया के सिर पर रख दिया।

देखों, वे कैसे मज्जन में । यदि कीर कोई इतने बड़े पर यर होता सा घरवी पर पाँच भी न रखवा, योभ्न इठाना वो भज्ज रहा, उन बेचारी दोन बुढ़िया की कीर काँस उठा कर देखना भी नहीं। यदि रानाडे महारूप में ऐसे ऐसे सद्-पुर न देखें वो भाज इनकी इतनी प्रविष्ठा कैसे देखी।

#### ११-पिता की श्राज्ञा का पालन

भना ऐसा कीन होगा की श्रीरानचन्द्रकों को कथा न जानता हो। ये भपने निता को भारत से, धर्याच्या की राज्याही अपने भाई भरत के लिए त्याग कर, चौद्रत वर्ष तक इन ने रहे। यह बात बहुत पुरानों है। भभी कुछ दिन हुए, एक राजकुमार ने ठोंक ऐसा हो काम कर दिखाया। यह किन्न भाश्यय की बान है कि यह भी श्रीरामचन्द्र की का ही उगत या इसका उन्हालन सन

सबाह का स्या शालीस्त का द्वापुत्र सा एक का नाम सामान्य सा स्योग उसर का तद्योगक । या दाना दस्य भाग सा भागीसर अवस्थित संकुत २३ वत्र समा सा इस कारत

मी न में । पहले तो बहुत दिन तक वे चोते हो नहीं, जब बार भगे तब बहुत तुनला कर । उनके माता पिना उनकी दगा है कर मन में कहा करने थे कि यह शहका क्या करके सामा कुल बड़े हाने पर उनका उनके पिता में एक पाठगत में धैटा दिया। कुल दिन में उनकी बागी शब हो गई। वि ता बहा विजीता बीर दवेल लक्का ऐसा भनता निकला

हाइबार्ट के अस है। समें।

रहत अर में कोई खड़का उसके समान न बा। दिन पर दि उसकी विशानमृद्धि बहुती श्री गई। धननी तृद्धि श्री मीकाशाः। कारम उपने बाल काल में ही माती पहाई समाप्त कर सी। अन पड़ जिल्ह कर ये निकार ना प्रत्ये एक छाती ह नीकरी विश्व गई। बन्नति होते जन्त ते क्या दिन बंबई ।

तथ हैने चरित्रण की का कर भी राजें चित्रमान प्रश बराज मा । वे मना करतेगी पाल-नवन बे पाने गन्न बरन स । अध्यक्षी भी वैदार दी अपना करने में । नरवाकू स हैं र करें मालब हुआ की में बात ही कवा ने पान सब न कान म । पंतर हर परमें ने करी भूडि कही क्या । उस्तरित से सम्बद्धी भागते थे। साथै में सम्बद्धीन नारक अब हो बा वस बी के पूर्ण पर अपने मही भी । बेन्द्र क कार इसर कि शह वक्षी के दूरण में देशन कर है दार्थ रत त राजा नहां है व हाईबाई ब अप है, श्रमके क्षेत्र. माद्दा देख कर भीर बढ़ी मनक कर कि कोई सापारय मनुष्य होगा, इनसे कहने लगो—'भैया, तनिक मेरे दोक की हाय लगा दो"। यह मुनते हो उन्होंने दोक बढ़ा कर बुढ़िया के सिर पर रुख दिखा।

देत्या, वे कैसे मजन थे। यदि भार काई इदने वहे पर पर होता ता घरती पर पांच भी न रखता, योभ उठाना तो भन्ना रहा, उस बेचारी दीन तुढ़िया की भार भारत उठा का देखता भी नहीं। यदि रानाई महारूप में ऐसे ऐसे सद्-पुर न होते ता भाव उनकी इदनी प्रतिष्ठा कैसे होती।

#### ११-पिता की आज्ञा का पालन

भना ऐमा कीन होगा जो श्रीरामवन्त्रजों को करा न जानता हो। ये भगने पिठा की भाजा से, भयोष्या की राजगरी भगने भाई भरत के लिए त्याग कर, चौरह वर्ष तक वन में रहें। यह बाद बहुद पुरानी हैं। भभी हुद दिन हुए, एक राजहानार ने ठीक ऐसा हो काम कर दिलाया। यह किटने भाजार्य की बाद है कि यह भी श्रीरामवन्त्रज्ञी का हो वंशास था। इसका हुवान्त मुने।

संबाद के राद्या जाजिसह के दो पुत्र की एक का नास सामानक द्या कीय हमारे का उपनिष्ठ । ये देनेते बस्त दे जाजित उपनिष्ठ स कुछ पटे पूर्व देसका का हम



वादा १० १वर सामा १० विल्ले में हराने ही क्या है। यह इ देखें है कहते क्या है हुं। कांनासिक पहुँ साथ हर करेंद्र से करत हुआ करते तिहा है राज करा। परन्तु हर दर वन्हें राह पहुँदा दर नार्व रहा है हुत दिनेक ही हम हैनी। नहां दुन करत रहे हुत है केर मेर महिलाई है केर हैं है है है दिह है देख रहा था। रहा की रेसी करा केंद्र कर बीमीटिंह का क्षेत्र वर्गा मन्त्र व्यूनवर है। क्षा । क्षेत्र के हुन कहन है जिस में के कर कारा या वह तम मूल गरा। . राक्षा को मोनानिह को इस कार करने हुई दता की हैस कर कार्य है हो रह । रहा की विस्तान कर कैर ومع القروب و العربي مشيشة مستند و المناور مراع المراجع ا मतिता । परम्यु वर राटा में देखा कि मोनाने कर रहत

ही करता है है करता बढ़े करता के कार किया है कर के कर हो बढ़े करिया हुए । को जाया के कारी कार कर के कर देता के तिथा है ! का कार के कारी कार कर के कर के तिथा के तिथा है ! का कार के तिथा कर के तिथा है ! का कार के तिथा के तिथा है ! का कार के तिथा है ! का कार के तिथा के तिथा है ! का कार के तिथा है ! का कार



भोमिनिष्ट पुष नाथे राषा को बातें मुन रहा या। हसकी करूरों तरह अनुभव है। गया कि राषा में घपना हदय प्रायर से भी धपिक करोर बना लिया। यह अधिकार के लिए धपने प्रिय पुत्र के लोकन से भी हाथ धोना चाहता है। भामनिष्ट सन से धपने पिता की न्यायदियता की धाना करने लगा और सन ही सन विचार करने लगा कि भी भी यह काम कर दिस्ताईना कि जिससे हमा कर दिस्ताईना कि जिससे हमसे लगा कि भी भी यह काम कर दिस्ताईना कि जिससे हमसे नाम पर क्षण्डुन लगा ।

राद्या ने करे पुरुषार खड़ा दर कर कहा—"पुत्र, बादिक शेष विधार गत करो। इस हत्या में कुत हानि नहीं। रायव धीर देश के हित के रिया हुम सह काम कार्यय करें। यदि इसमें कुल कार्याय या पाप भी होगा है। मेरा होगा, हुन्हारा सही। अपने, में बाता देश हैं, पुत्र जयस्तिह की नार बाको।"

की मिल्लिक ने बादी की सम्बद्ध करते करहाँ की पास कर हो भी पहुला में बहुता की पास कर हो। पाल है के पास कार में बहुता के बहुता की सम्बद्ध के कार कर है। कार कार की पास की पार्टिक में करिया के कार में बहुता की कार में करिया के कार में कार में करिया के कार में करिया के कार में में कार में में कार में कार में में कार में कार में में कार में में कार में में में में में में



ई चीज स्त्री गई है ?" दशीरसहरमद ने कहा—"हाँ, मेरो हों की देंसी स्त्री गई है !" सड़के ने उसकी देंसी उसे देकर हा—"देखिए यही ती नहीं है ?" काड़सी ने कहा—"हाँ, ही है !" देंसी लेकर वह वहीं देंठ कर रुपये गिनने सगा । जब रुपये पूरे निकले वह आश्चर्य में होकर उसने हा—"तुनको इवने रुपयों का कुछ भी लीभ न सुआ।"

ड़के ने कहा—" दचपन से ही मुक्ते यह शिखा दी गई है कि रायंड्रव्यको टोकरों को ममान समक्षता चाहिए'।" सड़के की ति सुन कर उसकी सचाई के लिए कायुजी बड़ा प्रसन्न हुआ ार मन में कहने लगा—"ऐसे सत्यवादी और निर्जीभ पुत्र की ।कर इसकी माता-पिता न जाने कितने प्रसन्न होते होंगे।"

काडुली उस लड़के की पाँच रुपये देने लगा। लड़के ने 'हा—''मैंने के पारिकेरियर पाने से योग्य कोई काम नहीं किया। ''पको बस्तु सापको मींप दो। यह वो करना उचित हो या।''

प्रकार पहुंचे प्रकार साथ हो। पह वा करना अपने हो सा । ' कादनी ने वह नद समाचार एक फ्रीरेट्टो समाचारपत्र (अया दिया असने इसने यह सा लिखा सा कि द हपूर्व पानत द कक साल सा का दे पदि सहका हमस देश (त्या का हुने का साथ सामाय हमा सहस साथ (या का हुने का साथ सामाय का साथ का साथ की साथ (या का हुने का साथ साथ सामाय की साथ की साथ का साथ (या का साथ का का साथ साथ की साथ साथ की साथ साथ (या का साथ साथ साथ साथ की साथ साथ की साथ साथ साथ २६ - बालविनाद।

उस सड़को का नाम बीरेश्वर मुकर्जी था। वह बन्न् ज़िल' स्कूल की एंट्रेंस कचा से पढ़ता था।

#### १४-नासिरुद्दीन महमूद (१)

बादसाह नासिकरोन का जीवन-प्रतान्त पढ़ने से हम समफ मकते हैं कि जा मतुष्य सम्प्र, सकत ब्रीर सीपे सारे होते हैं पाहे ने बादसाह भी हो जायें तो भी उनकी धानिमान नहीं होता थीर ने धपनी मजनना की नहीं छोड़ते। सरा

सत्कमें द्वी करते रहते हैं। नासिक्दोन महमूद सुलवान ध्यतनमा का पीत्र या। पितासक के मर जाने पर असके ग्रतुष्मों ने उसे पकड़ लिया। उसके पकड़े जाने पर, देहलों में जितने बादशाङ हुए, उन्होंने धपनी अना की ऐसा सताया कि बहु नयकी सब विगड़ खड़ी

हुई धीर नासिरु होन को छुड़ाकर उसने धपना बादशाई बनालिया।

जब नासिकरोत बादशाह बना तब राज्य के कार्यों में उपने बड़ी शुदियां पाईं। पहले बादशाही की धमावधानी से यमुना के दिखियों भाग का सारा देश धीर मालवा पठानीं के हाथ से निकल गया था। धीर सुगुन सिन्य नदी के पार

उतर कर पठानों के देश पर चढ़ाई करना चाहते से। नामिक्दोन ने सबसे पहले यह काम किया कि सपने नासिक्टान गहमूद ।

त बन्द मध्या गयासुरोत की काराह से सुरानों की कार्न कर रोव दिया धीर जी देश दीतों में दश लिया या बह बरवं सब होटा दिया।

१४—नानिस्सीन महमृद (२)

नातिकरोत की विद्या की बनी पार सी। वह दिल्ली .. का बता साकार किया काता था। तरह टार में मारो म क पाने में बह कात दिन देशन कृता, वहता का कि लेक्सून का कह आ तर्र इंड हरान कार्य होता हा। सहकान वे बरते वहारे दर क्षा हराते एत्सकी का देखान्याकरू इ.ट व हेंद्रा । इसने साम्बद्ध दीत हैस्त का एक ब्लाह्स

हर्त हरार में द्वार अवस्था मुख्याका राज्य व्यक्त की नाम पर सहस्र And Sugar the a garden before وم المرا ه دي ودو مراسي ودو وده ودي عديد و المراس وديد و ا ca bear services in which are desired to the services to عدر مو ده دشاه دما مداده و معاشد awas a copy of some time traines and an

and the same of the same of the ود و هم الله ول والد المود المستوفة الله الم

तम लड़को का नाम बीरेश्वर मुकर्जी था। वह बस्नू ज़िल रकुल की एंट्रॉम कचा मे पहता था।

#### १४-नासिरुद्दीन महमूद (१) बादशाह नासिरुद्दोन का जीवन-युत्तान्त पढ़ने से हम

समक मकते हैं कि जो सनुष्य सम्य, सज्जन भार सांधे सारें होते हैं पारे ने बादसाह थां हो जायें तो भी उनको अभिनान नहीं होता भीर ने भपनी सज्जनना की नहीं छोड़ते। सदा सहक्षे हो करते दहते हैं। गासिकरोन महसूद सुलवान भलतमझ का पीत्र या। विवासह के मर जाने पर उसके शतुकों ने उसे पकड़ जिया। उसके पकड़े जाने पर देखी में जिसने बाहबाह हुए, उन्होंने सपनी प्रजा की पेंगा सवाया कि बह सकते सद विनड़ कहां हुई बीर नासिकरोग की हहता कर उसने भपना बाहबाई

बना जिया।

जन नासिरुहोन बादशाह बना सन राज्य के कार्यों में
उमने बहा बुटियों पाईं। पहले बादशाह हो की समान्यानी
से यमुना के होच्यों भाग का सारा देशे से समान्यानी
के हाय से निकल गया था। और सुग्ले सिन्या नदी के बार
उत्तर कर पठानों के हेस पर चन्नाई करना चाहते थे।

कर पठानों के इश पर चढ़ाई करनी च।इत घे। नामिनहीन ने सबसे पहले यह काम किया कि धवने न्त्रो गयासुदीन को सलाइ से सुगुलों को धाने बढ़ने से क दिया धीर जो देश धीरों ने दबा लिया या बद युद्ध .रके सब सीटा दिया।

#### १५-नासिस्दीन महमृद (२)

नामिरहोन को विया को वही चाह यो। वह विद्वानों 
ता यहा सत्कार किया करता या। तरह वरह के मन्यों 
हे पट्ने में वह रात दिन ऐसा लगा रहता या कि जेलसाने 
ता कह भी उसे कुछ सुरान मालूम होता या। राज-काल 
हे करते रहने पर भी उसने पुस्तकों का देखना-भालना 
तर न किया। उसने भारतवर्य भीर देशन का एक भन्दा 
विद्वास तैयार कराया, जिसका नाम उसी के नाम पर "तवहात नासिसी" रहस्य गया।

नासिरहोन को इस पाव का बहा प्यान रहता या कि मेरे कारण क्षिसों का चित्त न दुखे। एक दिन प्रपनी दनाई एक पुलक असने प्रपने एक गरदार की दिखाई। सरदार ने उसमें कई एक प्रश्नाधियाँ दवाई। गरदार के क्षमानुसार असिरहोन ने बैसा हो दना दिया। परन्तु अब गरदार चला गया वह नासिरहोन ने बैसा हो दना दिया जैसा पहले था।

नामी ने पूढ़ा "यह क्या दान है। जो झापने काट दिया या ध्रव "पर वहीं क्यादना "द्वया !" नासिहहीन ने



ही है कि मैं पुलकें निया दिया कर वेषता भीर वीसी से भारता पेट पालटा हूँ। उसकी भागदनी इटनी भी नहीं होटी कि हम दुम भण्डी टरह या पी सकें। किर भला दासी कहां से स्या सकटा हूँ।

: रहा केशा । उसमें मेरा एक पैसा भी नहीं । वह दें। प्रज्ञ ; का हैं । इसी के सुख कीर लाभ के कामे में समादा जा सकता : है । दादि में काज उसमें से एक पैसा भी ले लूँ दें। कण ईश्वर ; को क्या उत्तर देंगा । जिस प्रकार ही सके, यह कह सही, ; ईश्वर तुमको इसका कल हैगा।"

## १६—सवाई जयसिंह

कीरंगहें कीर बहाराजा जयिन्ह में किमों कार क्रमन् दम ही गई। कैमोहिन ने बहुंगा चाहर कि महाराज में दहना में, पर के भरती पुक्रिमानों में उसके हाय न धाये। उसके बरने पर बारगाह ने उसके लहके की पकड़वा मैंगाया। राज-हमार कमों तक दिया ही मोगाने में हमों के कीर संमान के व्यवहार न जानते में। चाले मनय उसके माई दस्यों ने काली अपनी समान के बाहुनार बारगाह के रही के उहन दहले जाल-हमार न कहा। जो बादगा ह उसमा मा का बादगान पुत हा क्या उपन हों। इसका मा क करा। दशा धारमा माम मा



कर बड़े बड़े कर सहवा हुमा देग-विदेश सिली हमा । इसकी बड़ी हुने देशा थी। कभी वह माहवा टांग, कभी ग्वाहियर, भीर कभी किनी सबन बन में दा दिखा। वैरानर्खी का एक सबा निव था। महुतकातिन दसका नाम था। वह ग्वाहियर राज्य का एक बढ़ा कमैंबारी था। वह भी इस आपत्वात में वेश बहुत कर भपने निव के साथ सिरवा था।

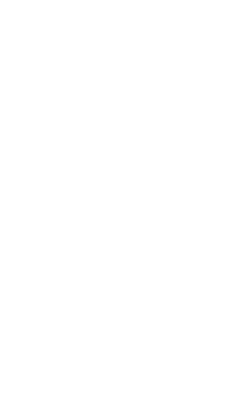
एक दिन दीनों नित्र एक हुए के नीने दैठे हुए यह क्षेत्र रहे ये कि भर क्या करना चाहिए। इतने में पडानों का एक सरदार इन्द्र सिगाहियों को साथ तिये हुए भा पहुँचा। उसने भावे ही उन देशों को पेर दिया भीर कहने सगा—"हुन कौन हो १ कहाँ से भाये हो १ कहाँ आभोगे १"

यह सुन महुनकासिन ने कहा—"माई, इस यात्री हैं। मक्के रारीक बाने के जिए गुजरात को भीर बा रहे हैं।" यह सुन भीर मन में कुछ सेवकर सरदार ने किर पूछा—"दुन हो कहाँ के ?" महुनकासिन देश उठा—"दंगास के।"

दैसानहर्ष भीर भट्टरकृतिन इन दोनों की भाषु वरावर भी। इनका रङ्कर भी देना निज्ञता जुल्हा या कि ये दोनों सहोदर भाई प्रतीत होते थे।

सरदार के मन में कुछ सन्देह पैटा हुआ। उसने आसी साधियों से नुद्धा—"पुसमें से कोई उनके पहचानता है १ में समभ्यता हूँ कि ये अवाय गुलाबों के गुप्तकर हैं। इस पर एक







पालने पहते हैं १ ऐसा न करूँ तो बृहे माँ-धाप की कहां से तिलाक १ घाप घपनो वार्ते घपने पास रितए । वस धव मलाई इसों में हैं, कि जो कुछ तुन्हारे पास हो सब चुपके से रख दो घाँर घपना मार्ग पकड़ो । नहीं तो ऐसा लट्ट मारुंगा कि सिर फट जायगा।"

रज़ाकर ने ये बार्वे कहीं वो वहें क्रोध में, परन्तु साधु वो साधु ही या। उसने उसकी वार्वो की सुन कर कहा—"मैं हुमसे एक बाव पूछवा हूँ। क्या हुन्हारे मावा-पिवा आनवे हैं कि दुम किस प्रकार धन कमा कर सावे हो ?" रज़ाकर में कहा—"मैं पढ़ कुछ नहीं आनवा।"

साधु ने कहा— "मच्छा एक वार उनसे पूछ दो आमो। देखो तो बुन्हारी यह कमाई उनके पसन्द है या नहीं ? यदि पसन्द हो तो भाकर मुभे भार हालना। में साधु हूँ, भसत्य कभी नहीं बोलता।"

रहाकर ये बावें सुनवे ही दिस्तित्वता कर हैंस पढ़ा और कहने समा—"वाह! कच्छो कही! मैं स्वर पर लार्जे, काप इयर चन्यत ही! मैं कापकी यार्वों को खूब समभ्यता हैं। काप सुभे न सिखताइए, सीधे सीधे देना ही वो दे दो नहीं वो वैसी कहो।"

#### २०-उपदेश का फल (३)

साधुने इसको बातों को कुछ भी पद्मीन को । इसक्ता



धव तक कुसंगित में पढ़ जाने के कारण, धवान से, जो कुछ किया सो किया; परमात्मा से वसके तिए चमा माँगो। धीर रात-दिन वसकी भक्ति किया करो।"

देखों, साधु के उपदेश का रहाकर के इदय पर ऐसा प्रभाव पढ़ा कि वह विलक्कल सुधर गया। फिर वह परीपकार भीर पढ़ने दिखने में ही राव दिन लगा रहवा था। हांवे छोते उसका यश चारों भीर फैल गया भीर विद्या भी उसे इवनी भिषक भा गई कि उसने एक बड़ा प्रन्य निर्माण किया; जिसका नाम रामा-यस है। वहां रहाकर बाल्मीकि के नाम से विख्यात हुआ। बाल्मीकि रामायस इन्हों ने बनाई थी।

## २१-महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिल्लो देखो न होगों तो उसका नाम तो सबस्य हो सुना होगा। क्योंकि वह एक बड़ी प्रसिद्ध धौर प्राचीन नगरी है। भारतवर्ष के राजा धीर पादशाह सदा वहीं रहा करते थे।

प्राचीन काल में दिशों के पास हो एक बहुत यहा तगर या। उसका नाम हरितनापुर या। वहाँ का राजा दुर्योधन ध्रमने पचेरे भाई पाँचों पाण्डवों से बड़ी ईर्ष्या रखता या। दुर्योधन के द्वारा कह पाकर पाँचों पाण्डव घपनों माता कुन्ती को साथ तंकर वहाँ से चलें गयं। वे वेश बदल कर एक शहर में एक



धव तक कुसंगति में पड़ जाने के कारण, भद्रान से, जी कुछ किया तो किया; परमात्मा से उतके डिप्ट चना माँगो। भौर रात-दिन उसकी मिक्त किया करो।"

देखों, साधु के व्यदेश का रहाकर के हृदय पर ऐसा प्रमाव पड़ा कि वह विज्ञकुल सुपर गया। किर वह परोपकार भीर पड़ने जिल्लों में ही राव दिन लगा रहवा था। होवे होवे वसका यश चारों भोर फैंड गया भीर विद्या भी उसे इवनों भिषक भा गई कि वसने एक दड़ा प्रन्य निर्माण किया; जिसका नाम रामा-यस है। वही रहाकर बाल्मोकि के नाम से विल्याव हुमा। वाल्मोकि रामायस इन्हीं ने बनाई थी।

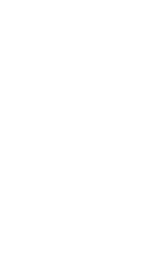
## २१-महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिझो देखो न होगो तो उसका नाम तो भवश्य हो मुना होगा। क्योंकि वह एक बढ़ी प्रसिद्ध भीर प्राचीन नगरी है। भारतवर्ष के राज्ञ भीर पादशाह सदा यहीं रहा करते थे।

प्राचीन काल में दिली के पास ही एक बहुत बढ़ा नगर या ! उसका नाम हत्तिनापुर या ! वहाँ का राजा दुर्योधन ध्रयमें चर्चरे भाई पाँची पाण्डवों से वहाँ ईप्यों रखना या ! दुर्योधन के द्वारा कह पाकर पाँची पाण्डव सपनी मावा कृन्ती के माय संकर वहाँ से चले गये ! वे देश बदल कर एक गहर में एक











### २२-महारानी कुन्ती की सज्जनता (२)

एक दिन ऐसा हुमा कि भीमसेन तो घपनी माता के पास रह गया भीर शेष घारों भाई भिन्ना लेने घले गये। घकसमात् ब्राह्मण के घर से राने पीटने का शब्द सुनाई दिया। रदन की सुनते ही कुन्ती ने ब्राह्मण के घर आकर देखा तो ब्राह्मण घलग रो रहा है, ब्राह्मणी घलग सिर पीट रही है भीर उनके लड़के घलग बिलचिन्ना रहें हैं। कुन्ती ने उनसे राने का कारण पृद्या, परन्तु राने धाने में कौन किसी की सुनता था।

जय कुन्ती ने बार वार राने का कारण पूछने का लिए हठ किया तप प्राह्मण ने कहा-- "माई क्या पूछती हो क्या बताऊँ! वह युरा दिन काज का ही गया कि या ते मैं स्वयं उस राजस के पास जाऊँ भीर खो-पुत्र की सदा के लिए दुख-सागर में निमग्न खेड़ जाऊँ या इनमें से किसी की भेजूँ।

हम पर में कुल पार प्राची ठहरे। वताभी, किसे राखस का भोजन बनाऊँ। यदि हममें से किसी एक की भी जान गई तो शेप तीनों तदप तदप कर मर जाउँगे। इससे दो यही भन्दा कि हम मब घारों एक साथ उसके पास चलें जाउँ धीर वह एक साथ हम मथों की खा जाय।"

माद्राय की पार्वे सुन कर कृत्वों ने कहा---"यदि इतनी दी बात दें तो सुम क्यों रेते ही ? मेरे पाँच पुत्र हैं। मैं उनमें से एक को राचस के पास भेज दूँगी।"



# २२-महारानी इन्ती की सबनता (२)

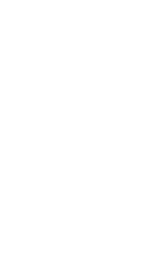
एक दिन देखा हुमा कि मीनवेन के मानते नाता के पास ह गया मौर केद पारों गाउँ निवा होने पते गये। मामलाद एमा के पर से रोते पोटने का क्या सुनर्य दिया। रहन के हुत्ते ही हुन्ती ने बाह्य के पर आवर देखा के बाह्य माला के रहा है, बाह्यों माला सिर पीट रहा है मौर उनके सहसे माना विल्विता रहे हैं। हुन्ती ने उनसे केने का कार्य पृक्ष, रहात रेले केते में में कीन विली की सुन्ता या।

डब हुन्दों ने बार बार रोते का कारय पूछने का तिए हठ क्लिय का प्राप्त ने बहा—"मार्व क्ला पूछतों हो क्ला बतातें ! बह हुस दिन प्राप्त का हो सब कि या दो में खपें बस सबस के पास बाठें मेंस कोसूब की सदस के तिए दुसन्सत्स में

रिनम से इंटाई साइनरें से किसी की नेहूँ।

इस घर में हुए बार प्रायो ट्यारे । बारामी, किसे राघत का भोजन बनाई । यदि इसमें से किसी एक की भी कार गई देशकी दोने टड़ा टड़ा कर मर वार्री । इससे की यही करता कि इस सब बाटी एक साब उसके रास बसे बारी भीर बहु एक साब इस मार्ग के का दाय ।"

बाहर को बाउँ हुन कर हुन्छ। ये कहा—गराहे हटते हो बाद है ते हुन क्यों तेंद्र हो मेरे चौर चुत्र हैं। मैं इसमें से एक का एक्स के राम मेट हुंगे



ति ताशम के समीद भेजते का मारा पुतास्य कुन्दी में तिका कह सुनाया।

शास्त्र के साम सहते के लिए भीमतेन का मकेश ही अला मुन कर दुधिश की बही चिन्हा हुई, उनके मुख्यद बहारी हा गई। देमन ही सन श्रेंदर से भयते माई का कुशर मनाते सने ! उन्होंने कहा—"भीम की मकेश म भेवन पाहिए या।"

द्विशि को जिल्हा में पड़ा देख कर कुन्हों में कहा— पुत्र, हुम जिल्हा न करें। भीम के घर की में जानहीं है कि किया है। हुम नहीं जानहें। हुमके सामे पराज्ञम पर पूरा भरीगा है। दह कहाय उस राज्य की मार कर सकुरन बड़ी काणपा।

प्रयोग महाय की प्रतित है कि देश किया किया कहा में हैंगी तेर द्वारी तक ही मकी दमकी सहायदा करें 3 की महाय दूसी के दू मा में सहायदा करते हैं, प्रशोधन सदा दसकी सहायदा करता है। दूस बद्दाभी सहा : भैंने दी भीना की भीना है ते हाम्बद भीर दमके दान-अदी के बाद द्वारी के नित्र भीना है।

मुख्य यह हट दिश्यास है कि पामेश्वर हमकी स्थाप सहा-दल कारा। दस राष्ट्रम के मार कार्य स सार मार्ग्सिट्सिट्से के प्राप्त कर कार्य-

र बार एक स्थाप कर है। यह स्थाप कर स्थाप के स्थाप के स्थाप कर सुरुष के समय के स्थाप के स्थाप के



की शास्त्र के समादि भेजने का सारा पृत्तान्त कुन्ती ने इनकी कह मुनाया।

रास्त के साम लड़ने के लिए भीनसेन का भकेता हो लाना सुन कर पुषिद्धिर की वही चिन्ता हुई, उनके हुए पर बहासी ता गई। वे मन ही मन देखर से भपने मार्ट का कुगल मनाने लगे। बन्होंने कहा—"भीम की भकेता न भीनमा पाहिस्सा।"

पुथिति को जिन्हा में पहा देश कर कुन्हों में कहा— पुत्र, हुम जिन्हा न करें। भीम के पन की में जानती हैं कि किन्ना है। हुम नहीं जानते। मुभको कमके परावम पर पूरा भरोगा है। हह सब्बंध बन राज्य की मार कर सकुरन पत्री भाजपा।

वार्यक महत्त्वकी हरित है कि जी किसी की कह में हैसे तो बही तक ही सकी करकी महाददा को 1 जी महत्व्य हुमी के हु रा में महादश कार्य है, वस्तारा सहा हरकी महादश करता है। तुम घरराओं मह। भीने जी भीन की भेजा है ती माहत्व भीत हरके बाह-करी के बाद बचाने के रिस्त मेजा है।

मुक्ष बहु हर विधास है कि प्रशासन हमको बदाय सन्तः दश करता । इस राष्ट्रस के बार नाम से साम साम-निवासिका के बाद वर्ष गाये।

र को र हो हो हुए हो कि हुन्य व राष्ट्रण को ब्राह्म कर योध्यय कीई बादा । ब्रोह्मण्य में राष्ट्रण को ब्राह्मण



को सहभ के समीद भेतने का मारा ब्लान्स कुन्दी ने इनको कह सुराया।

शस्त्र के साथ एड्ने के लिए भीमसेन का अकेला ही लाता सुन कर दुश्रिष्टिर की यही बिन्ता हुई, उनके हुन्य पर उदासी छा गई। वे सन ही सन ईश्वर से अपने भाई का कुश्ल मनाने लगे। उन्होंने कहा—"भीम की अकेला न भेजना पाहिए था।"

पुबिद्धिर को चिन्हा में पहा देस कर कुन्हों ने कहा— पुत्र, हुम चिन्हा स करें। भीम के बन को में जानती हूँ कि किता है। हुम नहीं जानते। सुभको उसके परावम पर पूरा भरीसा है। वह सबस्य उस राष्ट्रम को मार कर महुरान कहाँ भागाया।

प्रापंक गतुम्म को जीवन है कि की किसी को कहा से हैसी कि जहाँ तक ही सकी इसकी महादश करे। की मतुम्य दूसरी के दुःस में गहादश करते हैं, परमोग्रा महा काफी महादश करता है। हम पदागोग महा। भैने की भीम की भीका है तो काक्ष्म भीर तसकी बाल-करों के बाद बयाने के निहा भेका है।

हुने पर हर दिशास है कि परनेपर हमको सहाय सहा-दल कोला। तम राज्या के बारे जाने से बारे राज्यनिहासिये। के बाद रच जारेंग /1

याना है। ही रही की कि इत्याने राष्ट्रण की नार कर नाथान कींट कारण नायान ने राहत का नाम है।



देगानदारी।

धीर कर्षे में दासका ठीक ठीक मूल्य यहा दिया। भाएक ने प्रवर्भ में दाम निकाल कर एसकी मामने रस दिया। FT लड़का जब कापड़ें की तह करने छगा तब देखा ती कपड़ा एक आह से कटा हुना था। यह देख कर इसने माहक

eri

संबद्दा-"आई देख हो, काशों कह देशों कारता है, कारहा यही पर तील सा कहा हुआ है। में तुमका जताये देता हैं। पोले सं दर म बहना कि सहके में हुओं. धारन है दिया हु? Ve Dei

बाहक म देख कर कपहा हैगटा दिया और बादने दास बहा पर दुवानदार भी देता हुम्मा दे बाहें. सुन रहा का। एक्के की बात हुन कर वह बहुत दिनहां। बसने स काल करा के दिया की मुलादा और दससे करा-

भूभकारा क्षत्रका कार्यात होत कार्य है। देवाल हात है करत का रही है। दह शांत देवता नहीं कानहा । दह कार बारक कर है कि बाल के बाद है है के पास कर हो । के रहा का वह कार नहीं कि बाल के लेंग केंग वास्त

Contact on the Chi or when or them to date. ent are seen in morning by the an

to which was all on the same of the contract of



के पार प्रवार दी भीर यह विचार कर लिया कि यहुमा को अपने राज्य की सीना दनायें। यह देख कर उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड मिन्टों ने सर चाल्ते मेडकाफ़ की उनके पास भेजा। सहाराजा ने सेटकाफ़ साहय का यहा भादर-सरकार किया भीर कुछ सीच समभ कर चैनरेज़ों से मेल कर जिया। सन् दिल्ह सीच समभ कर चैनरेज़ों से मेल कर जिया। सन् दिल्ह सीच स

रस्वीतिमिष्ट के पराहम के भागे अकृगानितान के पठानों को भी अपना निर नीचा करना पड़ा। इन्होंने कादुन के बाह्साद साहसुडा में कोएन्स होस ने निया था। इस होरे को ये सर्वेदा भयने पान हो स्पर्व थे।

इनके पास सब मिना कर कोई दो लास दस इज़ार सेना थी। घपने सैनिकों को युद्धविद्या सिसाने के निष् इन्होंने सूच के बहुत से लोग नौकर एवं छोड़े थे। उनमें जनरम बेनपुरा श्रीमीनी सबसे तुम्य थे।

श्यालेडिनिंद शेल-बीत में होटे ये। इनकी एक स्पीत भी मीडित के कारये नह हो गई यी। इनकी साहाँव से ऐसा बीर रस टरकड़ा या कि युद्ध में इनके सामने केई न टहर सकड़ा था। भारी से मारी विस्तित में भी ये कमी न दिवनते ये।

्रहर्के राज समा के भैर समानद ता घरते बस्त करहे. स्टून कर बादा करते व रसन्तु य स्टूब सम्बन्ध हो उस्त ह



के पार द्वार ही कीर यह विचार कर लिया कि यहना को ध्रपने राज्य की सीना बनावें। यह देख कर उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड मिल्टो ने सर पार्ट्स मेटकाफ की उनके पास भेजा। महाराजा ने मेटकाज़ साहद का यहा धारूर-

मत्कार किया और कुछ मीप मनक्ष कर बँगरेज़ी से मेह कर तिया। सन् १८०६ ईसवीं में इन्होंने सवतन के पार से घपनी सेना लौटा ली। रदलोविभिष्ट के पराक्षण के माने कफ़ग़ानिनान को पटानों

को भी भरना सिर नीया करना पट्टा। इन्होंने कामुल के बादकाह कारमुख से कारनूर होता के जिया था। इस होते का ये सर्वेहा करने पान ही रखते ये।

इनके पास सब निजा कर कोई दी लाग दस इज़र संना यो। सपने नीनिकों को पुरुषिया निग्नाने के लिए इन्होंने दूर के बहुत में लोग नीकर रख खोड़े थे। उनमें वनरह बेनपूरा क्रांतीनी सबने हुन्द है। स्दर्शतिह रोल्डील में होते हैं। स्नको एक माँस

भी गीवता क कारद नष्ट हो गई भी । इनको बाहावि से ऐसा ति सम टरकता का कि पुढ में इनक मामने कीई में टटर मारं सं मारं विश्वम में भी दें कमों न राक एवं सम् क देश सबाह से देखें करते कार

ومد سام مده و دروع د سود و المعاد الم المع



हराई के दरले मलाई।

सबी में ७ जून के सन्तवा समय १८ वर्ष की कवस्वा में

२६—चुराई के बदले भनाई।

रक दिन एक टाइर नाइर घरनी चौराल ने कैंडे से। में एक मेल हारा सका भूगा प्रत्या व्यर मा निकला हर टाइर साहिद से कहते समा- भूत के नार नेता दम

कलता है, कुछ कार्न को नित जाब, जिससे बागे बतने का हाता हो।" टाहुर ने इसे ब्लिट्स पर कहा, "बड़, यहाँ हे हा है साने की कुछ नहीं है।" दर उस देवारे ने कहा, "सोड़ा हों नो ही किला देगें। टाइर नाहिर मार्च में बाहर हो गर्द कित कहते हते, "दू पहाँ से टायम कि नहीं; वह देंचे हते

हैं दिनों तेह हूँ ?" पर सुन कर बढ़ देवारा अपना सा कुँह ह मोहें ही दिन रीटें टक्ट नाहर रिकार की बन में

ति। वहाँ राह मूल गर्न केंग्र महत्त्वे महत्त्वे एक महत्त्वे के स का निकनं रात बहुत बीत गां की बीद वनका गाँव बहुत

े हा इसमें अपेक्ष के सामेक में उसके करने दहीं दिका हर बहर एक करने हैं राज्य कर करना है र हो हुत तकं दाम क्या के वा कार्र क्या देवा हर हेक्र सहस

र्प पुक्र देर इनके संपेत्र के देस प्रस्क देखा का कार से







क्षीत हरकों ने इसका टॉफ टॉफ सून्य का दिया। फाइक से ुरक से टाम ज़िकाल कर उसको सामने उस दिया।

शरका जब काई की दर करते जाता दर देखा देत इत्तर एक जाए में कहा दूका का ! यह देख कर उन्तरे महक सकता मां को देख में। यह देश कर उन्तरे महक सकता मां को देख में। यह कह देश कावड़ दें, करहा यहाँ दर तोक सा कहा दुका है। मैं दुक्को जहाय देश हूँ। सेंडें स दह सकता देश महक महम समा ह हिसा

तार्थ सहार्थ ४० ६० हा सीता द्वारा कीय कारत हाक ६ अस

. इ.स. १६४१ वर्षी हुए देशह सुरक्षा इ.स. १६६६ हर्षा व्यवस्था स्थाप १६४ - ६ वर्षा व्यवस्था स्थाप

ा वाक का क्या के युद्ध है हुक्या के के के के जाता शारी तालक पहुं के के या के ता के या कि या का मान के या के या क्या के या के या का मान किया के या क्या का मान के या कुछ हुए। किया का स्वर्

तिया ६ दर द्वा ६ नद्व ६ त्या ३ दर वर्ष वर्ष १ दर्भ त्या ६ द्वाच्या होता १ १ दर देश देश देश देश हो



र । बाबानव सब बादमी इचर बबर भागने लगे धीर शाह धदराष्ट्र संघ गई। देगाने से जान पता कि एक रा हाथी बन्दन तुला कर शुसता हथा भागा कला है। जिसका शृह जिया की बता बह बयर की भाग त । इस राष्ट्रक से एक छोटा बस्पा सहित की रोद से बहा, कुन्दी बहुत दात का गया , दश्ये के प्राष्ट्र सकड़ से त किशा से कार्य बचारे का साहस स किया। बनवा ब रेंदी के दीचे इस्ते हो की या कि एक बादमी से दीह हत हाई वे का जिल्ला की बहाधा की ज़िंद की लेवेंट से क्ष कर जिस्सारका असर हर कर दर्भ हो समसे e fin marte bride bates bride gan blie bei . Camila mi green er ene egwarer an ear ere erege e crease that we will be the fire of the first and a constant of the first A CALL OF CALL OF CALL CR RYCK CONT. The respondence to the second second 

tere of a me to see



महाराजा रामिनेंद्र भीर एक बुढ़िया की कहानी। पृश् वेरिक भीर कोई न या। महाराजा प्यास से व्याकुत वो हो रहे घे, पहुँचवे हो बुढ़िया में योसे—"माई, घोड़ा सा ठंटा नी विजा दे।"

यह सुन कर सुदियाने उठ कर उड़ से भरा हुमा एक हो का वर्तन हा रक्सा। इन सीटड़ इन्ड को पान करके हाराजा को प्याम जाती रही। जड़ पोकर देडस म्होपटी में

ाराम करने समे।

कुद देर भाराम करके महाराजा बुट्या से पूछने समे
हुन्हारे कोई हैं भी १ इस जगल में तुन्हारा निर्शेष्ट कैसे होता
१'' बुट्या ने ज्वर में कहा—'' देटा, मेरे कोई नहीं हैं। एक
अ या, परन्तु कारह वर्ष से जनका भी पता नहीं, न जाने
हाँ पता गया। मैंने एक कार सुना या कि महाराजा
सिनिष्ट के यहाँ एक पहाडों दुने में रहता है।

भीरे साने पीने का कोई कामरा नहीं, यहाँ पैठी हुई में लिप्सों को उन दिनाया करना हूँ जो किसी ने कुछ दे दिया ए कभा जान की नकहा था जहा पूरा कुछ दिक तई है। एमा मानगर पर्धा घरना एन करना हूँ सा घर मेर किया एक मानहा होता (साम मान में राम राम माही का रामध्य एक का करा कुछ मा लाग कर ता ता का प्राणालाय राम प्रमा करा करा है।

्रहता कह कर पुरस्पारात नागा । ते इस कर सङ्ग्रह



महाराजा रामसिंह धीर एक बुढ़िया की कहानी । ५१ ।रिक्त धीर कोई न था। महाराजा प्यास से व्याकुल तो हो रहे थे, पहुँचते ही बुढ़िया से योले—"माई, योड़ा सा ठंढा । पिला दे।"

यह सुन कर युढ़िया ने उठ कर जल से भरा हुआ। एक हो का वर्तन ला रक्या। उस शीवल जल की पान करके ाराजा की प्यास जावी रही। जल पीकर वे उस भोपड़ी में राम करने लगे।

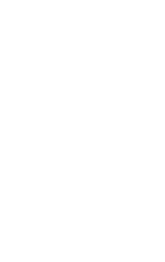
कुछ देर धाराम करके महाराजा बुढ़िया से पूछने लगे पुन्हारे कोई है भी ? इस जगल में बुन्हारा निर्वाह कैसे होवा ?" बुढ़िया ने उत्तर में कहा—"वेटा, मेरे कोई नहीं है। एक र घा, परन्तु वारह वर्ष से उसका भी पवा नहीं, न जाने हाँ चला गया। मैंने एक बार सुना घा कि महाराजा मसिंह के यहाँ एक पहाड़ी दुर्ग में रहवा है।

मेरे खाने पीने का कोई स्थासरा नहीं, यहाँ पैठी हुई में त्रियों को जल पिलाया करती हूँ। जो किसी ने कुछ दे दिया र कभी जंगल की लकड़ी या जड़ी यूटी कुछ विक गई तो मी से लस्टम पस्टम स्थपने दिन काटवी हूँ। सो अब मेरे कियं ह भी नहीं होता। इस समय में ऐसे दुःख में हूँ कि परमेश्वर । करे कि शत्रु की भी ऐसा कष्ट हो। पुत्र की वियोगागि मुक्त मलग ही जलाया करती है। "

इतना कह कर बुढ़िया राने लगी। यह देख कर महाराजा







## ६२—प्रतिज्ञापालन (१)

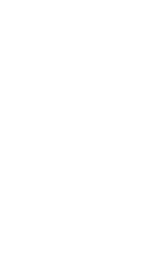
क्षात्मार्थ के कैर प्रान्त हो भवना ने भारते भविकार हे कर श्रीतियों के एक शावतुमाना की बचा हुआ था। बढ़ श्री का मेटा पाएडा था। पढ़ी भीप कर उसने एक बार सक्युप्तने का भी थारा कर दिया। पुढ़ युद्ध हुआ।

की नक्षत कार्य सूचि को रहा के दिए सुद्धे हो को कार्य में, पार्यु कार्य में उनके पाँव उपार्य हो गये। साम्रोति का नारार राया प्रशासित कार्य बाल्यमें की मेका किसी क्षान्त में कार्यार।

चन राष्ट्र की ने उसे गाँव न स्व गाँ की कि के हे मार्क काक सुनों में पुढ़ करते, परन्तु हों, क्यों करते करने की को ने में जिस्त जिस्त कर सुनों पर का हुटते की नुर गा का गिर नीड़ का जा दिन्हें।

स्थी नक्ष्में में स्थापित होना का एक बहु स्था की नक्ष्म का एक्टे में की साम्युद्ध स्थापित की रूप कुर नाम क्ष्म का लिए वे की प्राचीता में इस्ता नम गांक का कि का का साम्युद्ध के हुद्द उनकी प्राचीत की कार्य कराया स्थाप अपने के बहुद्द उनकी गांग के कि कार्य स्थाप साम्युद्ध के बहुद्द के की की मांग के कि कार्य कार्य साम्युद्ध के बहुद्द के की की

many of the first of the second



। परन्तु रपुपविसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन की सा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साधियों के हे की सुना धनसुना करके पर की धोर चल ही दिया। रपुपविसिंह जय सायङ्काल के समय धपने नगर में त वद देखा कि समस्व नगर में सज़ाटा द्वाया हुआ है। के द्वार पर जावे ही पहरेवालें ने टोका—"कौन ?" रपु-सिंह ने निहर हीकर कहा—"रपुपविसिंह।"

पहरेवाले ने फहा—"वादशाह की भाशा है कि तुम जहाँ ो मिलो पकड़ लिये जाभो ।"

रघुपितिसिह ने कहा—"भाई, मेरा पुत्र बड़ा धीमार है। समय उसकी घटी युरी हशा है। कुछ काल के लिए मुक्ते वर जाने दे। मैं धर्मा देख कर जीट धावा है। फिर तुम हे जी करना समस्य रहे 'क मैं राजाय है चौत्रय-सन्तान समय कमी न कटेंगा

पत्रदेशास्त्र स्पर्णात् वयः क्षात् कर शाहरणत का समा स्पर्भी ताम भाषा प्राप्त वयः सस्य स्पर्क सः क्षाता । यत्ति राग्नी भार स्पृत्तात्मात् का क्षात्मा स्पर्धस्य यात् तकर उसका सा हत्या प्राप्त गरा भारता । का यात्त रक उससी एक सम्या साम लकर कता — दे. जान्या प्रभावन

्जय राप्पतिभित्र भावर स्थाप्ता हरणा कि जहका राण कारम् विकल ही रही है। उसका भावा उसका जवल स



जार्ये। परन्तु रघुपविसिंह का इदय उस समय पुत्र-दर्शन को लालसा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साथियों के कहने की सुना बनसुना करके पर की झोर चल ही दिया। रघुपविसिंह जब सायङ्काल के समय झपने नगर में ,पहुँचा वर देखा कि समय नगर में समारा हाया हुआ है।

के द्वार पर जाते ही पहरेवाले ने टोका—"कौन ?" रधु-सिंह ने निहर होकर कहा—"रघुपतिसिंह।"

पहरेवाले ने कहा—"वादशाह की झाहा है कि तुम वहाँ र निलो पकड़ लिये जाओं।"

रघुपितिसंद ने कहा—"माई, नेरा पुत्र बड़ा बोमार है। समय उसको बड़ो दुरी दशा है। इन्द्र काल के लिए सुके वर आने दे। में भर्मा देश कर लीट भाता है। किर तुम हे जो करमा। स्मरण रहे कि में राजपुत्र हूँ, चित्रय-सन्तान भन्नत्र कभी न कहुँगा।"

्तव रघुपतिभिन्न भोतर राया ते। इत्या कि जहका राग सारद्व विकल हा रहा है। इसका भाग वसका वरण स



### ३४-प्रतिज्ञापालन (३)

इस घटना की हुए अभी कुछ ही समय योवा होगा कि गाहियों का सरदार कुछ सैनिकों की साथ लेकर उथर आ कला। उसने आते ही पहरेवाले से कहा—"रघुपतिसिंह का ग समाचार थवाओ।"

न जाने रघुपविसिंह के घर प्राने धीर किर लौट जाने का माचार उसे कहाँ से विदित हो गया था। पहरेवाले ने भी ब ब्तान्त सच सच सुना दिया। सरदार ने रघुपतिसिंह के इ देने के धपराध में पहरेवाले को बाँध कर केंद्र कर दिया र उसके द्वार पर दोहरा पहरा बैठा दिया।

रघुपतिसिंह की यह बात ज्ञात हो गई कि मेरे छै। इंदेन-ला कैंद्र कर लिया गया है। यह सुन कर उससे न रहा गया। ह तुरन्त रात्रु के सरदार के पास धाकर उपस्थित हो गया। युपतिसिंह धीर उस पहरेवाले सिपाही दोनों की गारने की गज्ञा हुई।

दूसरे दिन प्रात काल ही स्मिपाही और रष्ट्रपतिसिह दोनी ग्रिय पाँव वैंथे हुए सामने खड़ोक्य गया उनके पास दे। ग्रियद नङ्गा तलवार लेकर खड़ हा गया विश्वाहा की बाट ख हो रहे थे कि इतने से बहा पर उन स्मिपाहिया का सेनापांत ना पहुँचा।

संनापित ने रघुपितिसह का झार उँगला उठा कर कहा — 'सिपाद्दिया, तुम जानते हा यह कीन है ? यह रघुर्यातीसह है



झव चमा किया । जो मनुष्य ईश्वर से नहीं बरतावह सिपाही हो नहीं ।'' इतना सुनते ही पहरेवाला सिपाही धानन्द में मम हो गया। हाय पाँव वैंथे होने पर भी वह वादशाह के चरवों में जा गिरा।

फिर बादशाह ने रघुपितिसिंह की भीर धाँख उठा कर कहा—"मुक्ते पहले इस बात का झान न घा कि श्र्वीर राज-पूत भपनी प्रतिशापालन करने के लिए ऐसे बीर होते हैं। मैं वुम्हारे परिश्रम, श्रुषीरता और प्रतिशापालन से बड़ा प्रसन्न हुआ। जाधो, मैंने तुमकी भी चमा किया। यदि धव भी शुम मेरे साथ शबुता करना चाहते हो तो जाओ, राखा प्रतापसिंह से जा मिली।"

रपुपितिसिंह बढ़ी धोरता और निर्भयता से कहने लगा— "जिस रपुपितिसिंह को इतना परिश्रम करने पर भी धाप न जीत सके थे, धाज धापने धपने हृदय की उदारता दिखला कर उसे जीत लिया। यदापि धाप मेरे राजु हैं, तथापि धापकी गुय-प्राही जानकर में प्रतिहा करता हूँ कि धव में कभी धापका राजु बनकर तजनार न उठाऊँगा।"

जो मतुष्य धपने वचनी धीर प्रविद्यामों का पालन करते हैं धीर सत्य पर हदता से जमे रहते हैं धीर दूसरी के दुःशों में सदा उनकी सहायता करते हैं, परमेरवर सदा उन पर प्रसन्न रहता है धीर उनकी सहायता करता है।

#### पद्यभाग

### १--कथीर की साखी

जो शिक्षें काटा सुत्रै, नाहि बोद तु फूल। ताको कुल क फूल हैं, बाको हैं तिरमूल ॥ १॥ दरवल की न सताइये, जाकी मोटी द्वाय । मुद्रे साल की स्वाम भी, सार मनमद्दी जाय॥२॥ या दुनियों में बाइ के, लॉड़ि देइ तू ऐंठ। सेना है सी लेंड लें, बटी जात है पैंठ ॥ ३ ॥ ऐसी बानी बातिये, मन का चापा सीय । चौरन की शांतन करें, झारी शीतप होय।। ४॥ हवा कीन पर कीजिये का पर निर्देश होता । मार्ड के सब जीव हैं, कीरी कुंतर दीय।) ५ ॥ जहाँ दया तर्डे धर्म है, जहां आग नहें पाप । अहाँ कीय नहीं काल है, जहाँ चमा तह साम ॥ ६॥ मौच दरोवर ता नहीं, मूठ वरोवर पान। जाके दिग्दय सांच है, तांक के जाय में कराय के कराय के कराय की सांच ग्रंग्लंभ्याति का की

फाल करें से। घाज कर, घाज़ करें सो घव। पल में परर्ल होयगी, बहुरि करोगे कव।।स। हुर, जो देखन में पला, हुरा न दीखे कीय। जो दिल गोजी घापना, सुभसा हुरान कीय॥१०॥

### २-कवीर की साखी

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गद्दरे पानी पैठ। हीं धारी हुँदन गई, रही किनारे बैठ ॥१॥ नाहब के दरवार में, कमी काहु की नाहिँ। बंदा मीज न पावती, पृक्ष पाकरी नाहिँ ॥२॥ साहब मुन न विनारियों, लाग लोग निल जाहिं। इमसे मुमकी दर्व हैं, बुगमे इमकी नाहिँ॥३॥ डाका राग्ने मार्या, मारि न सकिई काय। दार न पांका करि सकी, जी जग पेरी हीय ॥ ४ ॥ साहय सें सब दोव दें, बंदे भी कहा नाहिं। राई सी पर्वत करे पर्वत राई माहि ॥४॥ दुरा में सुनिरन सद करें, सुरा में करे न कीय । मृत्य में जी मुमिरन करें, दूग्य काहे की दीव गर्गा एक्टिमाधे सब सधे सब माधे सब लाय। ता तु सीचे स्वकं क्वी कर्न छवार



करे हिस्स जा काहु की, ता में लद मर दान।
पर विदाकी हिस्स पर, जासी दी जग मान।।।।।
प्रीति दीति दुस्य मूल दें, में कीन्द्रीं निरधार।
प्रीति भली भगवान की, जाते दी भवपार ॥दा।
भन्नो न जग में श्रास कीड, त्रास दुःख की मूल।
पर सुरु पितु के त्रास सें, निर्दे क्लेश की सूल।।
तुरी मीगिको जगत में, जाते दी भपमान।
समा मीगिको ईरा में, भन्नो यहां कर दान।।१०॥

### ४--अम और संपत्ति

[स्फुन्दलाल शाकां-एत शिखाकौ सुदो से ]
जे जग में अम तें विविध, विशाधन धित लाह ।
संपिंहें फरिंहें सुजान ते, सुरा पार्थे मन भाइ ॥१॥
अम से विधा पाइये, अम कि से धन छोड़ ।
अम हो से सुख होत है, अमित लहे न फीह॥२॥
अम हो से प्रिथकार पुनि, लहत सतुज प्रियकाय ।
विन अम फारज होय निहें, अम से दुःस नसाइ ॥३॥
अमी पुरुष संपति लहें, अमी सुयश पर धाम ।
अम ही से या जगत में, हान लहें प्रमिराम ॥४॥
अम किर जे विशा पहें, मनुज मान तीज पाइ ।
त सुख लहें प्रयास विन, सर्पात प्रवस्त पर ॥४॥



संगति ही से लोक में, मिषक होई विस्तास । संगति दिन या ज्याद में, होई प्रतीत विनास ॥ १०॥ संगति से व्यवहार सब, सर्वे लोक पर लोक । दिन संगति के होते हैं, राजसमा में रोक॥ १८॥ इति सारद उत्तम पुरुष, श्रम कर जोरें वित्त । इति सारद उत्तम पुरुष, श्रम कर जोरें वित्त । इति सारद उत्तम पुरुष, श्रम कर जोरें वित्त । इति सारद जें महुत सुत्व, मार्ग सदा सुवित्त ॥ १८॥ स्विकताम से वो पुरुष, स्वर्ष करहिं मन माइ । पर्राह्म विगति की सानि में, पुनि पीले प्रतिवाहें ॥ २०॥

# ५--विद्युरनीति

[बाबू गोपाहवन्द्र दरनाम गिरवरदास भटुवादिव]
नरवाँव नसव कुमन्त्र सी, साधु कुसंगति पाय ।
विनस्तद सुद्र मोद्र प्यार सी, द्विज्ञ दिन पड़े नसाय ॥ हा।
पावक केंग्रे रोग ज्ञान, नवमें हुँ गाविय नाहिं।
भें में हुँ बहाहिं पुनि, महा यहन सी जाहिं॥ शा लेंग्रे मारीस भवगुन नहीं, दर नहिं पल समान होरा काहिं॥ सा सी पत्र मारीस सा मारीस सा मारीस सा मारीस सा में पुन मवदोगि मेंग्रे मिरा वाहि स्वोकार वाल-वान हैं करिय दी, होय गोदि महामार । पुनि मकत वस्तु नेप्द करें, मारी केंग्र दिन काम समय वर्ष पर ना मिल्ली, मारी नवस्त्र देन्न ॥ इन्तर पर ना मिल्ली, मारी नवस्त्र देन्न मारा



€.

विदुरनीवि । संगित हो से जोक में, मधिक होड़ विस्वास । चंचति दिन या जगत में, होइ प्रतीत दिनास ॥ १७॥ संपति से व्यवहार तब, तचे जोक पर लोक। दिन संपति के होत हैं, राजसभा में रोक॥ १८॥ इहि कारए उत्तम पुरुष, श्रम कर जारें विस्त । दृद्ध समय में बहुत सुख, भीनें सदा सुचित ॥ १५॥ ष्मिक लाम ले जा पुरुष, स्तर्च करहिं मन भाइ। नरिह विचित को स्तानि में, पुनि पोद्धे पद्धिवाई ॥ २०॥

४—विद्**र**नीति [ बावू गोपालचन्त्र उपनाम गिरघरदास मनुवादित] नरपित नसत कुमन्त्र सी, साधु कुसंगति वाय। दिनमत्त सुव घावि प्लार सी, द्विच विन पढ़े नसाव॥१॥ पावक वरी रोग क्ल, मपनेहुँ रालिय नाहि। षे बाहे हैं बड़िहें पुनि, महा पवन सी जाहिं॥२॥ लाम सरित मन्त्रान नहीं, वर नहिं पल मनान। वोरद नहिं मन-मृद्धि मन, विदा नन पन जान ॥२॥ का में शुन धवलोकिने, करिय वाहि स्वीसार । राज-स्वन हैं करिय जो, हार नोति स्तुनार nyn नकत बख संमह करें मार्च कार दिन काम । मय पर पर ना मिने, माटो रास्ये दाम ॥११







क्षिति सबै गति ईग्र की, कर न कहरूँ पाप ।

समिति पराचर कात की, देसत है वह काप ॥ ॥

सुन के दुर्जन के वचन, हो रहिये चुपचाप ।

करें की समता तासु की, नीच कहाने काप ॥ वा।

कुछ कहरूँ नहि बीलिए, कुछ पाप कर मूल ।

सुछे की कीड कात में, करें प्रतीति न मूल ॥ सा।

७-रामचन्द्र का गेंद्र खेलना [रामपिन्नता से] एक काल भवि रूप नियान वंत्रन की निकरे चौगान ! हाय धनुष भति सुन्दर रूप, संग लिए सब सोदर भूप ॥ बोधी सद प्रसंवारित मरी, हव हाधिन सें! सोहत खरी। वह-मुंद्रम सी सरिवा भर्ती: मानी मिलन समुद्रहि बली॥ यहि विधि गये राम चौगानः सावकारा सद भूमि समान। शोमन एक कास परिनान रच्यां रुचिर वापर यौगान ॥





















**\_?** बालविनेद । भाषता दाई पन्ना की संरचता में महलों में रहता था। एई दिन जैस हो प्रमाने उदयसिंह को खिला पिला कर सुलाया,

पन्ना ने नाई स ती। उदयमिष्ट का जुठा उठाने साया था पुछा-- "यह कीन रोता है ?" नाई ने घवरा कर कहा-"कामा बनवीर ने विक्रमाजीत की मार हाला।"

वैस ही सहल से कुछ रोने पीटने का शब्द सुनाइ दिया

इतना सुनते ही पत्रा घर घर कांपने लगी। यह सावन लगी कि बनवीर ने अब विक्रमाजीन की मार बाला, तब उदय सिंह की कर जीता छोड़ सकता है ? चदयसिंह के जीविर

इडने पर सदा उसे यही शंका बनी रहेगी कि बढ़ा होकर कई

बद्द समसे राज न छीन ले।

दय में घनोली स्वामिमित्त विराजमान घी। इसलिए धपने के मरने का बसे कुछ भी शोक म हुझा। पना उसी समय तिरंह को टेकरी में दिया कर नाई को साथ लेकर चित्तीर जबल खड़ी हुई। वे दोनों कमलग्रीर के टाकुर के पान जा थे। बसने बदयिनेह की बहुत झाराम से स्वस्ता। वहीं दिलंह कहा दोने पर चित्तीर का राजा हुझा।

## ४-भले पुरे की पहचान

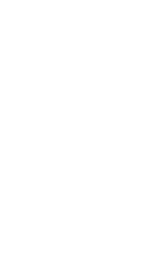


द्दर में भनेत्सं स्वामिभीक विराजमान थी। इसलिए अपने के मरने का बसे कुछ भी छोक न हुमा। पन्ना वसी समय रपिसंद को टोकरों में छिपा कर नाई को साथ लेकर विचौर निव्ह सको हुई। वे दोनों कमलमीर के ठाकुर के पास ला हुँचे। बसने बदयसिंह की बहुठ आराम से रक्सा। वही दपीसंद बड़ा दोने पर विचौर का राजा हुमा।

## ४-भले वरे की पहचान

जिस परमेश्वर ने इस सबको पैदा किया है और इसारे रिए तरह तरह के पदार्थ संसार में पैदा किये हैं वह यही पाइता है कि असी मनुष्य धर्माला, सज्जन और परोपकारों हों। जिस प्रकार माता-पिता अपने पुत्र से खदा प्रसम रहते हैं और इस पर बड़ो ह्या दिखलाया करते हैं, इसी प्रकार परमाला भी धर्माला, सज्जन और परोपकारी मनुष्यों से मदा प्रसम रहता है और इसको सहा सहायदा किया करता है।

रसमेश्वर में इसारे इस्त में एक ऐसी शांकि दो है कि जब इस केरी काम करते हैं दर बहु सुरन्त दरता हेती है कि यह काम पर्म है या स्थम, सन्द्रता है या दुरा । जब इस कोई ऐसा काम बह इस्तरें हैं कि जो इसे करना फलेबिर या दब इस पीछे बहुत पहाराया करते हैं । इस समय इसारे इदय में एक प्रकार का यहा हरता करते हैं । इस समय इसारे इदय में एक प्रकार का यहा हरता करता है । इसका काय पहां है कि बहु ग्रीन



हर में बालेको कामिमीत विराजनान यो। इसलिय अपने बंगाने वा बसे कुछ भी सोक म तुमा। पन्ना बसी समय बंधित को तेकरों में लिया कर नाई की साम लेकर विचीर जिन्न सही तुर्दे। वे दोनों कमलभीर के टाइर के पास जा हिं। बाने बद्दासिंत को सहुत साराम से रक्ता। वहीं कर्मित बहा होने पर विचीर का राजा तुमा।

## १-भते पुरे की पहचान

किर पार्रेक्षा ने इस सम्बंध पैटा किया है और इसारे हर हाए हरह के बदाबें संतार में चैदा किये हैं बह यही रेपा है कि बक्षे क्षानुद बर्काचा, सक्तर बीर परीपकारी हैं। विश्वाद क्षाप किल क्षेत्र पुत्र से **सहा प्रमा**स रहते हैं। है। का कर करा तथा दिसानाया कारते हैं, इसी मनाव Rich & Short Las gie Andani Bing of ole, है। के हें के दे के द करते. तक क्ष्मिक दिवा " The second of th







त्रटना) पहुँचे। वहाँ राजा विम्वसार इनसे मिलने घ्राये प्रीर हुत सा धन भेंट फरने सने परन्तु इन्होंने कहा—"मुफ्ते धन ने इच्छा नहीं। मैंने भगवान के लिए सब पर वार होड़ देया है।"

बुद्धजों ने गया में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों से छहीं ग्राम्स पड़ें। इससे भी जब इनको पूरी शान्ति न मिली वब ये भाँच शिष्यों की साथ लेकर जड़ुल में चले और वहाँ खाना पीना छोड़ कर भगवद्भजन में मग्न रहने लगे। परन्तु शान्ति फिर भी न मिली। वस समय इनको ज्ञान हो गया कि शरीर की शिक घटने से युद्धि की शिक भी कम हो जाती हैं। युद्धजी की इस प्रकार की स्थिर पृत्ति देख कर शिष्यों ने उनका साथ छोड़ दिया।

एक दिन एक पीपल के नीचे बैठ कर बुद्धजी ने यह निश्चय कर लिया कि घष मुक्ते क्या करना चाहिए। उसी दिन से छन्होंने युद्ध पदवी पाई।

सबसे पहले काशी पहुँच कर सारनाय के पास ये लागों को समभाने लगे कि सब जीवों पर दया करी।

कुछ दिन के बाद राजगढ़ के राजा विस्थानार इनके मत में झा गये। परन्तु इस पर इनके पुत्र ने रूप्ट होकर इन्हें मार हाला। परन्तु चुद्धजी जब फिर श्रमाय करते हुए राजगढ़ गये तो वह स्वयं भी उनका चेला हो गया।

इसी प्रकार युद्ध जो जागा का झपने अमें की बाते सिखाते





रहे। सहस्यों सनुष्य वनके चेते हो गये। धाजकव संगर जिनने बीद्यमगानुष्यायों हैं बबते थीर किसी सन के नहीं हैं। दो सहस्र वर्ष पूर्व हमारे देग में वनका सन की फैता हुमा था। धव भी चीन, जापान, कहा, स्वाप की स्मारे दूसरे देशों में यह मन अधिकता से पाया आता है। सन्य है संमार में सब आदियों पर दया काना हो गीन है। धन्सी वर्ष की धायु में बुदजी ने इस लोक को के

बाह्यावनाट ।

\_\_\_ ६-कोई काम विना सोचे समभे न करना

निर्वाद्य प्राप्त किया ।

चाहिए

पत्पप् यक्त बादगाइ की शिकार रोशने का यहा अन्यसन बा। उसने यक्त बाह पास रक्ता था। वद क्से बढ़ा चाहता था।

यक दिन वह बाजू की साथ लेकर रिकार की बाता। अनुस्त में वर्ष्ट्रेंच कर एक दिनन के पीछे बाने पीड़ा बाल दिया। बहुद बूर तक पीड़ा मागा, परन्तु दिरन द्वास न साव। निहान वा

क्ष कर नेठ गया और प्याम संग्यान का साथ। तिहान का इस कर नेठ गया और प्याम संग्यानल और पीड़िन होड़ी इस चढर मत्र की स्थाम करने सथा। स्थामना स्थामना एव वहार के नीचे मा बहुँचा।

बहार के नीचे मां बहुँचा। नम वर्षण से बूँद बूँह करके बड़ा निमेन जन ८५४ रहा था। उसे देख कर बहरगार ने एक करास निकाल कर कोई काम विना सैंग्ये समर्क न करना व्यक्तिंग । ६.४ तम् के नीचे रख दिया। जब कटोरा भर गया धीर व्यवस्थात ने फीन जाहा तभी याज ने पर भार कर वसे थिया दिया। बादगाह ने किर कटोरा पानी से भरा धीर पीना ही व्यक्ति था कि बाज ने किर पर भार कर गिरा दिया। बादगाह प्यास से इसे व्यक्ति या। उसने क्रीय में भर कर बाज की पृथ्यी पर परक दिया। बाज प्रस्ती पर गिरते ही भर गया।

ाले ने बादगाह का एक नीकर, जो पीछे रह गया या आ पहुँचा। उत्तने झाकर देखा कि पाज गरा पदा है थे। कार्युका धाउ से व्याकुत हो रहा है। नीकर ने मिन्स किया कार्या प्राप्त में से पानी भर कर बाटन के सानने किया। बादगाह ने कहा—"जो निर्मन कर बाटन के माने किया। बादगाह ने कहा—"जो निर्मन कर बाटन के माने किया। बादगाह ने कहा—"जो निर्मन कर बाटन के माने में से स्पन्न रहा है जपर जाकर उनका कर मर लाते हैं।











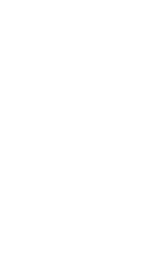
















रिहेली लड़ी है तों त्यों चित्त की भी आनन्द होता रहाहै।

किलों कार्द के कारम्म हो की देख कर उस काम के करने-के ए दियो प्रमत्कारों और महन-शोलवा विदिव हो ैरे। रेले ज्य इस लोग किमी इवेची की वीड़ा चाइते हैं हे म्हाय इसकी पहली ईट चरताहुता है उसी की इस र प्रशास मनुष्य मानते हैं, बयोक्ति पहली ईंट के उखाड़ने भीर ही का हरराह सेना सहज हो जाता है। इसी प्रकार ' है'रे बाता से झारस्य करके बड़े बड़े काम भी हो जाते. किन पहले ही बाद कार्र मनुष्य मीमाप के सबसे ऊँचे मा पर बहुने का रखीत करे ही निश्चय है कि बह मुँह के ीं भा और इसकी आएए वर्जी संपर् न होगी। क्येंकि क रोहे की शोहियों पर खड़े उत्तर की शोहियों पर कीई १ कर राक्षण । कामएक ऐसा कौत व्यक्ति है कि जा पहले १ र सार बाता के किए कि दे शुक्र बार ही बढ़े बाफी के बाते Leves

व १६० च रा रुप है । दराष्ट्र पदि क्याचा बरहेराला
 सापू पं । १००१व हा रा बाई बरा माँ गोंच मा महामान
 (१००१ १६ ६ ववन कीए बद माँद करापु का कुकरिय
 १ १ १ १ ववन का देवा का का क माराम बरे दर
 १ १ १ १ ववन का देवा का माराम के स्वादात्त्र















किए कर्ष वासे की तो अरपूर शिष्म देने हैं पर र कर्म शिक्ष से पहरी परंश कराति, जीवन का बाद र की व के जाय केंग्र सकता मुख्य प्राप्त हो तथा में के कराइ के तरि, ऐसे बाख की शिष्म गड़ी देने। में जिल्ह ए तरि कारच कार्य कर के हैं। इस्मीकर मीला को का्मू के रिल्ड एक्सी हा बाकता है क्यांकर मीला के बीक्ट्र में रिल्ड एक्सी हा बाकता है क्यांकर की मानवार के रिल्ड एक्सी हा बाकता है क्यांकर्ण की कर है। की का का क्यांकर है सामान मार्गहर के कर इस्ट

The second of th

in the second se

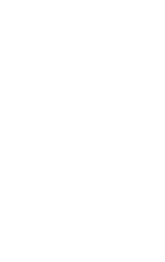


मत्त्र के तह होने का क्रानुताप बनके हृदय की क्यर्श तक नहीं कातः । लोबन को माद्य पुद्ध करने को लिए सुमन्तिन युवक हर किन किन नियमों को अवलम्बन करके समय के सद्-धारुण काने पर समलमनेतरम हो सकते हैं, इस विषय में रह हात-हर्य महात्मा ने नीचे हिस्सी प्रदाली के भनुसार क्षा करते की काहत दी है-

मैसद का वर्ताव

(!) बहुत से कामी की एक साथ करने का सहज उपाय कि एक दार एक ही काम की करी।

- (१) हो बाम तुरस्त पूरा करने धार्य है बसे बसी समय 1 ferg 1#
- (३) जिस काम की ध्वाज करता है। उसे कर के लिए क काल प्रकारी।
- (४) है। काम सापते किये होता है। हमें हमारे के बरोहे म सीका र
  - १४) बदलहरू से जिल्ली करही कर दूस किया बाह्न
  - बलावर क्षी संबद्धी विकास केपान ह (६) बर्ट क्षांत्र काम पुरा किया व्यक्ते ही ही हमें हरें
    - at 48 67 5
      - द दारा केर रुपरी है की कार्य कार्य कर्यों के कार्य . दमन है अन् करनकार हुआ की रहेल हैं।



## पद्मभाग

# १-- चृन्दविनाद सतसई

मान होत है गुनन ते, गुन विन मान न होय। **एक सार्य राखें सबै, काग न राखें कोय ।।१॥** हुरे लगत सिख के वचन, हिये विचारी भाष। कड़कों भेपज बिन पिये, मिटे न तन की ताप हर।। रहे समीप बहुन के होत बहु। हित नेत। संबद्दी जानत बढ़त है, वृत्त बराबर बेल ॥३॥ हितहू को कहिये न तिहि, जो नर होय अवोष। स्यों नकटें की झारसी, डीत दिखायें कीय ॥४॥ भोछे नर की प्रीति की, दीन्हीं रीति बताय। जैसे धींदल ताल जल, परत पटत पर जाय ॥४॥ जिहि प्रसंग दूबय लगे, तजिये हाको सामा ह मदिरा मानत है जगत दूध क्लाली द्वार ॥६॥ लाकं <sup>सीत</sup> दूपम दुवं करिय विद्धि पहिचानि सारा हैसे <sup>मान</sup> हुन सर सुर' **महाँगै पानि** ६३ की अर्थ मुख की कैसे पार्टी के पा । ५० ६ प्रमुखी वे शेव ।



हिनन" वे नर मर चुके, जे कहुँ मांगन जाहि।

ते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि।

य दशा कुल देख के, सर्वे करत सम्मान।

हिमन" दीन चनाच की, तुम पिन की भगवान एट।

#### ३--रहीम के दाहे

.हिमन" चुप है घैठिए देखि दिनन को फेर। । नीकै दिन आय हैं, बनत न लगिष्टे बेर ॥१॥ 🕈 दिमन" नीचन संग वसि, लगत कलंक न कादि ? । फलारिन हाच स्तित, मदसमभिं सवताहि॥२॥ र (हिमन" निज मन की विघा, मनदी राखी गीय। ने घठिलीहें लोग सय, याँटिन लीहें कोय ॥३॥ गरी बात बनै नहीं साख करी किन कीय। हिमन" बिगरे दूध की, मघे न माखन होय ॥४॥ (हिमन'' भती न कीजिए, गष्टि रष्टिए निज कानि। हिजन भान कूलै तक, हार पात को हानि । ५॥ ही रिल्मन देश्य बड्न का नेप से देशमध्ये इस्पे हर काम अस्ति सुर केन करे तरवाप । र उद्धार को प्राप्त करी सर्वे स्टास प्राप्त करी Marie Brance At Garage Ranges .



दुष्ट मनुष्यों के लक्ष्य।

विन कर संग सदा दुखदाई। विमि कपित्तिह घालै हरहाई॥

सत्तन हृदय भवि वाप विशेषी।

अरहिं सदा पर-संपाते देखी ॥

जहें कहुँ निन्दा सुनिहँ पराई। इपेंहिँ सनहें परी निधि पाई॥

बैर भकारन सब काह सो।

जो कर हित धनहित ताह सी ॥ <

भूठं लेना भूठे देना । भूठे भोजन भूठ चवेना ॥

बेलिहें मधुर बचन लिमि मेररा ।

साय महा भवि हृदय कठे।

सोनै झोड़न सोमै हासन । वस्तादर पर यमपुर वानन ।

काहू को जो सुनहिँ दहाई।

्रिश्वम लेक्टिलनुक्**दां भा**डे । <sub>अब्दास्तर</sub> का इसी विश्वन

सुन्दा **राहि** सामन् प्रतम्बन

লাধ্যন বুল বিমান লালার আনুবার আন আলাভু আলোভু



रोमचन्द्रं को लड़कपन।

विद्या विनय निपुष गुष शीला। खेलेहिं खेल सफल नृपलीला॥

करतल बाय धतुप प्रति सोहा।

देखत रूप चराचर मोहा॥

षन्यु सस्ता सब लेहिं युलाई । वन मृगया निव खेलिहें जाई ॥

पावन मृग मारहिँ जिय जानी।

प्रतिदिन नृपद्दि दिखावहिं धानी ॥

भनुज सस्ता सँग भोजन करहीं। मातु पिता भाक्षा भनुसरहीं॥

जेहि विधि सुस्ती होहिँ पुरलोगा।

करिं कृपानिधि सोइ संयोगा।।

प्रातकाल चि के रघुनाया। मातु पिता गुरु नावदि माया॥

भागमु मौगि करिं पुरकातः। देसि चरित दरविं मन राजा॥

कोराज प्रस्तासी नर, नारिवृत्य घर बाछ । ब्रायह वे ब्रिय सागरी, नव करे राम क्याल ॥



#### मारोच-वध ।

### ७-मारीच-वध

( रामायद से )

हेहि बन निकट दशानन गयऊ। वव मारीच कपट मृग मयऊ॥ भति विचित्र कहु बरनि न लाई। कनक-देह मटि रचित बनाई॥

सीता परम रुचिर मृग देखा । भंग भंग सुमनोहर वेषा ॥

सुनहु देव रधुवीर रूपाला । यदि मृग कर घरि सुन्दर हाला ।

सत्यसथ प्रभुवध कर रही। ज्ञानह वर्स करा वैदरी।

मृग विकासि का पाक वायी। करतम चार शंघर शंघर श

द्भार १९५ के देश से भी हैं। १००० १० से भी भी देश कर्म १९४० में देश दिवस

द्रा के द्रा केरण जीव जूग राष्ट्र विके दक्षीत सद्देश के रण



वरिष्ठली का मरतज्ञी की उपदेश।

वृपिहेँ वयन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ।
करहु दात पितु-वयन प्रमाना ॥

रूरहु सीस घरि भूप रजाई। हैं तुम कहें सब मांति मलाई।।

पर्ध्यसम्ब पितु-माता सम्बी। मारी मातु लोक सद साम्बी॥

वनय प्रवाविद्दि बौदन दयः ।

पितु भारत भय भया न सप्त ॥ भनुषित विचत विचार तदि , जो पालहिं पितु चैन । वे मादन मुख सुपग्न के , इसहिं भनरपति-रेन ॥

> भवशि नरेश दचन कुर करहू । पासह प्रजा शोक परिहरहू ॥

द्भुरपुर नृप पाइहि परिवेष्ट् । हुन कहें सुक्त सुपरा नहिंदीप् ॥

देद विदिव सम्मद संबद्दी का। लेहिं पितु देह सो पावे टोका॥

करहु राज परिहरहु गलानी। सामहुँ मोर वचन हिन जानी॥ साम मुख जरूब राम बैडेले

धनुषि कड़ी सरहम बने



वशिष्टजी का भरतजी की उपदेश।

नृपहिँ वयन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु वात पितृ-वयन प्रमाना ॥ करहु सीस घरि भूप रजाई।

करहु सीस घरि भूप रजाई। ई तुम कहेँ सब माँति महाई॥

परश्रुराम पितु-माझा राखी।

मारी मातु लोक सब सासी ॥

त्तनप ययातिहि सौतन दयक ।

पितु भारा भय भयरा न भयक ॥

मनुचित बीचत विचार तिन , जा पालहि पितु वैन। उ माडन भुस्त सुपरा कें, बलहि फनरपति-रेन॥

> द्भवरि। नरेश बचन पुर करहू । पात्रहु प्रजा शोक परिहरहू ॥

त्तुरपुर नृप पाइहि परिदेशपू।

तुम कहैं सुष्टत सुपरा नहिंदीपू॥

देद विदित सम्मति सब्द्वी का। जेक्टि पितु देद से पात्रे टीका॥

इंडन राज बरिज्यतु । समाना ब्राह्म ब्राह असम जिल्लामानी ।

. = <u>\_</u> = == . = <del>|</del> ===



वशिष्ठजी का भरतजी की उपदेश ।

नृपिहेँ वचन प्रिय निहं प्रिय प्राना । करहु तात पितु-वचन प्रमाना ॥

करहु सीस धरि भूप रजाई। ई तुम कहें सब भाँति भलाई॥

परश्चराम पितु-भाक्षा राखी। मारी मातु लोक सब साखी॥

सनय ययातिहि यौवन दयऊ ।

पितु झाहा झघ झयश न भयऊ ॥ मुचित उचित विचार तजि , जो पालहिं पितु चैन ।

भाजन सुख सुवश के, यसिंह प्रमरपित-ऐन ॥

प्रविश नरेश वयन फुर करहू । पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥ सुरपुर नृप पाइहि परितेष्र ।

तुम कर सुकृत सुयश नहि दापू॥

वेद विदित सम्मत संबही का।

जेरि पितु देह सी पावे टीका।) करन र न परिहरत् रखानी

भाग र १९९० । ११ ११ भागती सीर वचन जिला सामा ॥

, प्रस्य प्रत्य राम वैद्रहा

--

भसुभित कर्तुन संग्रहन तक



पितु सुरपुर सिपरान वन, करन कहह नेहिँ राज। यहि वे जानहु नीर हिव, के झापन वड़ काज।।

> हिव इमार तिपपित सेवकाई। सो हरि लीन मातु कृटिलाई॥ मैं भतुमान दोख मन माही। भान बपाप मीर हिव नाहीं॥ शोक समाज राज केहि लेखे।

स्तन-राम सिप-पद वितु देखे ॥ बाहे राम पहें सावस देह ।

एकहि भेक मार दिव पेंहू ॥

माहि समान को पाप निवासी । डोहि हिम सीय-पाम बनवासी॥

राप राम कहें कानन दोन्हा । विद्वरत गमन भनस्पर कीन्हा ॥

में शह सब सनस्य कर देतू। देहि बाद सब सुनड सचेतू॥

दिन रहुदोर विनास सदास् १९ राज्य मोद डर दरकास्

्रा सह करेडू कड़ाइन हाका १३ १ व संबंध करें साक



